

भारत में आतंकवाद

डॉ. नीतू सिंह तोमर*

सारांश:-

भारत में आज देश-प्रदेश का प्रत्येक व्यक्ति और समाज आतंकवाद की समस्या से ग्रसित है। दहशत, चोरी, लूट, डकैती, हत्या बलात्कार, भ्रष्टाचार, विश्वासघात की विभीषिकाएँ व्यापक हैं। अपराधी और आतंकवादी तथा उनकी योजनाएँ पूर्णतया सफल हैं। ऐसी स्थिति में आतंकवादियों के अपराधों पर अंकुश लग पाना ठीक उसी प्रकार असंभव प्रतीत हो रहा है, जैसे किसी बालक द्वारा अपनी छाया को पकड़ना अथवा किसी नदी-तालाब में प्रतिबिम्बित-चाँद के माध्यम से चंद्रमा को पकड़ना। ऐसा क्यों? उत्तर जानने के लिए अपराधी, अपराध और आपराधिक घटनाओं की अंजाम प्रक्रिया को जानना होगा।

आतंकवादी विध्वंस का जो सिलसिला शुरू हुआ है, तो वह थमने का नाम ही नहीं ले रहा है। 11 सितम्बर, 2000 को अमेरिका में हुई 'ट्विन टावर' की घटना के बाद तो इन आतंकवादियों के हौसले बुलन्द हो गए हैं। अब तो कहीं आसानी से ये किसी भी बड़ी घटना को कहीं भी अंजाम दे सकते हैं, इसके बाद 13 सितम्बर, 2001 को भारतीय संसद पर हमला हुआ, 12 अक्टूबर, 2002 को बाली(इंडोनेशिया) में बम विस्फोट की घटना हुई, 16 मई, 2003 को मोरक्को में, 27 फरवरी को फिलीपीन्स में, 11 मार्च, 2004 को स्पेन की राजधानी मद्रिड में बम विस्फोट और 1 से 3 सितम्बर तक रूस में बेसलान की घटना हुई, 5 जुलाई, 2005 को अयोध्या में राम मन्दिर पर हमला हुआ। 7 जुलाई, 2005 को मिस्र के शम-अल-शेख नामक पर्यटक स्थान पर बम विस्फोट हुआ, लन्दन में ट्यूब ट्रेन के अन्दर बम विस्फोट हुआ तथा 25 अगस्त 2007 को आन्ध्र प्रदेश में बम विस्फोट की घटना और 26 नवम्बर 2008 को ताज होटल मुम्बई में हमला, 31 मार्च 2013 को श्रीनगर हुए हमले में 5 भारतीय जवानों की मृत्यु, 24 जून 2013 को श्रीनगर में हुए हमले में 8 जवानों की मृत्यु, 2 जनवरी 2015 को पठानकोट एयरबेस पर हमले में 7 जवानों सहित अनेक लोगों की मृत्यु, 27 जुलाई 2015 को गुरदासपुर हमले में गुरदासपुर के एस.पी.डिटेक्टिव बलजीत सिंह सहित 4 जवानों की मृत्यु, 7 दिसम्बर 2015 को अनंतनाग में हुए हमले में 6 जवानों की मृत्यु, 25 जून 2016 को पंपोर में सी.आर.पी.एफ.के काफिले पर हमले में 8

*एम.ए.,पी.-एच.डी.समाजशास्त्र, पोस्ट डॉक्टोरल फेलो, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली-110002

जवानों की मौत, 18 सितम्बर 2016 में उड़ी सेक्टर में सेना के कैंप पर हुए हमले में 20 जवानों की मृत्यु, ये सब उदाहरण इस बात को इंगित करते हैं कि आतंकवादियों की पहुँच कभी भी, कहीं भी, कैसे भी हो सकती है। इन घटनाओं से स्पष्ट हो गया है आतंकवादियों का लक्ष्य किसी सत्ता तक पहुँच बनाना नहीं, बल्कि विश्व समाज की शान्ति व्यवस्था को भंग कर विध्वंस करना है। विध्वंस को जन्म देकर लक्ष्य की प्राप्ति ही इनके उन्मादी जोश का प्रेरणा स्रोत है तथा लक्ष्य की प्राप्ति के लिए इन्हें इस्लामिक कट्टरता का जामा पहना दिया जाता है एवं इन्हें धार्मिक लड़ाकों की संज्ञा दे दी जाती है, जिसे जेहाद कहा जाता है।

भारत में जम्मू-कश्मीर के मुख्यतः आतंकवादी संगठन हिजबुल-मुजाहिदीन, अल फरान, हरकत उल अंसार सक्रिय हैं। आन्ध्र प्रदेश में नक्सलवादी संगठन 'पीपुल्स वार ग्रुप, लिबरेशन आर्मी, एम.सी.सी. सक्रिय हैं, मणिपुर में पीपुल्स रिवेल्यूशनरी पार्टी, असम में बोडों व उल्फा, त्रिपुरा में नेशनल लिबरेशन फ्रंट ऑफ त्रिपुरा, मिजोरम में 'मिजो नेशनल फ्रण्ट, नेपाल से सटे पूर्वी राज्यों में माओवादी उग्रवादी संगठन सक्रिय हैं। लश्कर-ए-तैयबा ने पूरे विश्व में आतंक का जाल फैला रखा है। पाक स्वयं 37 संगठनों का प्रशिक्षण स्थल बनकर स्वयं को आतंकवाद की समस्या का विरोधी बता रहा है। वहीं से आतंकवादियों को प्रशिक्षित खेप तैयार होती है, जिन्हें कहीं भी आतंक फैलाने को खुला छोड़ दिया जाता है।

आज विश्व के प्रगतिशील देशों और इस्लामिक राष्ट्रों के पर्यटक भारत प्रवास के दौरान देश के केन्द्रीय भवन में बने राष्ट्रीय संग्रहालयों की अबौद्धिक व्यवस्था को देखकर अपनी प्राचीनतम उपलब्धि पर अवश्य ही उत्साहित होते होंगे। यही कारण है कि अन्य मुल्कों के बौद्धिक एवं संगठित लोग योजनाबद्ध तरीके से भारत में घुसपैठ कर तरह-तरह की आतंकी व व्यवसायिक गतिविधियाँ संचालित कर देश की जनता का हनन कर राष्ट्रीय सम्पत्ति नष्ट कर रहे हैं। यहाँ तक कि संसद को घेरकर गोलीबारी, नरसंहार, तस्करी, प्रधानमंत्री की हत्या एवं देश का धन-सम्पत्ति हड़पने में सफल हो रहे हैं। यह एन.जी.ओ, कंपनी, मीडिया, दूतावास केन्द्रों के माध्यम से घुसपैठ कर भारतीयों को लालच देकर आपने आतंकी संगठन में शामिल कर देश की राजनीति और लोकतांत्रिक व्यवस्था में हस्तक्षेप करने में सफल हो रहे हैं।

कीवर्ड: Terrorism—आतंकवाद, आतंक-भय, डर, मृगमरीचिका-धोखा, विध्वंस-नष्ट, कत्ल-हत्या, धर्म-धारण करने योग्य, वैश्विक-विदेशी राष्ट्र

विस्तृत:-

आज विश्व रंगमंच पर जिस भयावह प्रसंग का अवतरण हुआ है वह है— 'आतंकवाद' जिससे आज सम्पूर्ण विश्व को अपने आगोश में ले लिया है। इससे दुनिया का प्रत्येक देश त्रस्त है, सम्पूर्ण मानवता

का अस्तित्व खतरे में हैं तथा यह खतरा और बढ़ता जा रहा है, क्योंकि हम तकनीक का प्रयोग मनुष्य की सृजनात्मक ऊर्जा को जाग्रत करने के स्थान पर उसको विकृत करने में लगे हुए हैं।

आतंकवाद के इतिहास और उसकी परिभाषा के विषय के सन्दर्भ में स्पष्टतया कुछ कहना सम्भव नहीं है वरन् हम इसके शुरुआत के अंश इजराइल से मान सकते हैं। इजराइल में 'हामानाह' नामक एक संगठन, जिसकी स्थापना इजराइल के उदय से पूर्व 1920 में ही हो गई थी। इस संगठन को ही आधुनिक धार्मिक आतंकवाद का पितृ माना जाता है। हामानाह का संस्थापक एक कट्टरपंथी यहूदी 'जियोलिस्की' था, जिसने धार्मिक आतंकवाद के पाँच बुनियादी सिद्धान्त स्थापित किए—(1) धर्म को लोगो की पहचान और उनके अस्तित्व की सुरक्षा से जोड़ दो, (2) सिर्फ समान धर्मावलम्बियों से ही भाईचारा हो सकता है, उन्माद की हद तक इस विचार को स्थापित करो, (3) लोगों में यह विश्वास पैदा करो कि दुनिया में सबसे प्राचीन और गौरवशाली धर्म उन्हीं का है और बाकी सब धर्म निकृष्ट और भ्रष्ट हैं, (4) लोगों में यह भावना भरो कि सारी दुनिया में भिन्न धर्मावलम्बी उनके दुश्मन हैं, (5) लोगों को इस सीमा तक भावुक बनाओं कि उन्हें अपने धर्म के लिए कुछ और भी करने में हिचक न हो। इन्हीं सिद्धान्तों को कमोबेश इस्लामिक आतंकवादियों ने अपनाया है।

आतंकवाद का सर्वप्रथम उपयोग ब्रुसेल्स ने दण्ड विधान को समेकित करने के लिए 1931 में बुलाए गए सम्मेलन में किया गया था, जिसके अनुसार आतंकवाद "जीवन, भौतिक, अखण्डता अथवा मानव स्वास्थ्य को खतरे में डालने वाला या बड़े पैमाने पर सम्पत्ति को हानि पहुँचाने वाला कार्य तथा जान-बूझकर भय का वातावरण उत्पन्न करना है।" अतः आतंकवाद कोई पारम्परिक विचारधारा नहीं बल्कि वर्तमान सन्दर्भ में एक अनधिकृत 'वाद' बन गया है, जिसने राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हिंसा को साधन के रूप में अपनाया है, विध्वंस और आतंक ही इसके मुख्य उद्देश्य रह गए हैं।

आतंकवाद की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि आतंकवाद राज्य व समाज के विषैले चरित्र की उपज हैं। आतंकवाद की उत्पत्ति राज्यों में अल्पसंख्यकों या रंगभेद या जातीयता और धर्म के नाम पर अपनाई गई दमन और संरक्षण की दोगली नीति के कारण हुई। दरिद्रता, धार्मिक कट्टरवादिता एवं जातीय उन्माद और बाहरी राष्ट्रों के व्यक्तिगत स्वार्थों ने भी आतंकवाद को शह दिया है, ओशामा बिन लादेन को रूस के विरुद्ध खड़ा किया था तथा सी.आई.ए. ने ही प्रशिक्षित किया था लादेन ही अमेरिका की 'नाक का नासूर' बन गया था। सीरिया एवं ईराक में सक्रिय इस्लामिक आतंकी संगठन, जो आई.ए.एस. अथवा अल-शाम नाम से कुख्यात है, को अमेरिका ने विश्व शांति के लिए खतरा बताया है।

आतंकवाद ने भारत और भारतीय समाज को इस तरह जकड़ रखा है कि लाख कोशिशों के बाद भी ये जड़ से अलग नहीं हो पा रहा है, जितना हम दबाते हैं, उतना ही विकराल रूप लेकर ये सामने आ जाता है, आतंकवाद को कैसे परिभाषित करें, यही समझ नहीं आता, क्योंकि हर कोई इसे अलग-अलग ढंग से समझता है। भारत में स्वतन्त्रता की लड़ाई के समय अंग्रेज स्वतन्त्रता सेनानियों को आतंक समझते थे, जबकि वे तो अपने हक के लिए लड़ रहे थे। कई बार हक की लड़ाई लड़ने वाला उ

जाता है, उसे सामूहिकता वाला आतंकवादी समझ लेता है। हर हिंसा करने वाला आतंकवादी नहीं होता, लेकिन हर अहिंसावादी आतंकवादी न हो ऐसा भी जरूरी नहीं है।

आतंकवाद गैर कानूनी कार्य है, जिसका उद्देश्य जन-साधारण और आम जनता के अन्दर हिंसा का खौफ पैदा करने है। आतंकवाद एक शब्द मात्र नहीं है। यह मानव जाति के लिए दुनिया का सबसे बड़ा खतरा है, जिसे मानव ने खुद निर्मित किया है। कोई भी एक इन्सान या समूह मिलकर यदि किसी जगह हिंसा फैलाये, दंगे-फसाद, चोरी, बलात्कार, अपहरण, लड़ाई-झगड़ा, बम ब्लास्ट करता है, तो ये सब आतंकवाद है।

आतंकवाद का आशय ऐसी विचारधारा से है जो भय या डर-खौफ उत्पन्न करके अपने उद्देश्यों की प्राप्ति करे। आतंकवाद आज एक राजनीतिक, धार्मिक एवं वैश्विक समस्या के रूप में सर्वत्र मौजूद है। संयुक्त राष्ट्र महासभा के वर्ष 2000 में हुए 55-वें अधिवेशन में अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर अभिसमय का ड्राफ्ट तैयार किया गया, जिसके अनुच्छेद 2(1) के अनुसार, "किसी राज्य के विरुद्ध किया गया कोई भी आपराधिक कृत्य, जो आम लोगों को मृत्यु-चोट, निजी या सार्वजनिक सम्पत्ति की हानि शामिल है। आतंकवाद के विभिन्न रूप हैं-इथनो-राष्ट्रवादी आतंकवाद, धार्मिक आतंकवाद, वैचारिक आतंकवाद, राज्य प्रायोजित आतंकवाद, नारको आतंकवाद, पर्यावरणीय आतंकवाद, साइबर आतंकवाद, आत्मघाती आतंकवाद।

भारत में पिछली शताब्दी के अन्तिम दशक में आतंकवाद का जन्म हुआ और अब वह आतंकवाद भी उग्र रूप धारण किए हुए है। इस समय आतंकवाद की समस्या कश्मीर में मुँह बाये खड़ी है। हजारों आतंकवादी जब चाहे आग लगा देते हैं। जब चाहे अपहरण कर लेते हैं, जब चाहे बसों को उड़ा देते हैं। अनेक बुद्धि जीवियों, नेताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं का अपहरण किया जा चुका है, बाद में उनके क्षत-विक्षत शव ही प्राप्त होते हैं। विरोध करने की सजा मौत है। यहाँ पड़ोसी देश प्रशिक्षित आतंकवादी भेज रहा है। सीमा पर लगे प्रहरी आए दिन आतंकवादियों की गोली का शिकार बन रहे हैं। इस स्थिति का सुखद पटाक्षेप कैसे होगा? यह एक बड़ा जटिल एवं गम्भीर प्रश्न है।

प्रश्न यह उठता है कि आतंकवाद कहाँ से आया? इस सन्दर्भ में हमें एक और वाद से भेंट हो जाती है और वह है पृथक्तावाद। पृथक्तावाद ही आतंकवाद का जनक है। आतंकवाद पश्चिमी देशों की देन है। इच्छित वस्तु को प्राप्त करने के लिए संघर्ष व संहार करना, देश की जनता को भयभीत करना, अपहरण, लूटपाट, आगजनी, बम विस्फोट, हत्याएँ करना तथा इन माध्यमों से शासन को अपनी इच्छित वस्तु देने के लिए बाध्य करना ही आतंकवाद की प्रमुख भूमिका है।

आतंकवाद का नामकरण आतंक के राज्य शासन से माना जाता है। पहला आतंकी हमला जुलाई 1946 में जेरूसलम का माना जाता है जिसमें 100 से अधिक व्यक्ति मारे गए। पश्चिमी जर्मनी में रेड आर्मी फैक्शन की 1960 के दशक की गतिविधियों को प्रारम्भिक अन्तर्राष्ट्रीय आतंकी गतिविधियाँ माना जाता है। इस्लामिक कट्टरवादी विचारधारा ने तालिबान एवं अलकायदा के ओसामा बिन-लादेन को आतंक का पर्याय बना दिया।

आतंकवाद ने आज अनेक परिष्कृत साधनों का उपभोग किया है, जिनमें भौतिक, रासायनिक, नाभिकीय, जैविक, मानव बम आदि प्रमुख हैं, अत्याधुनिक घातक हथियारों द्वारा आतंकवादी अपने अनुयायियों को बड़े पैमाने पर प्रशिक्षण देते हैं, जिसमें मानव बम एवं जैविक हथियार अत्याधुनिक परिकल्पना है। मानव बम के द्वारा किसी भी परिस्थिति में लक्ष्य को अंजाम दिया जा सकता है, वहीं जैविक हथियारों के द्वारा कहीं भी बैठे-बैठे एक व्यापक स्तर पर तबाही मचाई जा सकती है। इंटरनेट के रूप में इन्हे आज एक और मजबूत यन्त्र मिल गया है, जिसके द्वारा ये गोपनीय सरकारी आँकड़े तक अपनी पहुँच बना किसी भी देश की अर्थव्यवस्था एवं सुरक्षा को तहस-नहस कर सकते हैं।

11 सितम्बर, 2000 की घटना ने यह सिद्ध कर दिया कि आतंकवाद कहीं भी अपनी पहुँच बना सकता है। इस घटना ने विकसित देशों के इस भ्रम को तोड़ दिया है कि उनके पास एक मजबूत एवं विकसित सुरक्षा कवच है। अब कोई भी देश आतंकवाद की पहुँच से दूर नहीं है, आतंकवाद रुपी वृक्ष की जड़े हर देश में फैलती जा रही हैं। आज विश्व के अनेक ऐसे देश हैं जो जाति, वर्ग, सम्प्रदाय, धर्म या नस्ल के नाम पर पृथक राष्ट्र की माँग उठा रहे हैं। रूस इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। बंगलादेश, अफ्रीका के देश, चीन के मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र पृथक राष्ट्र की माँग कर रहे हैं, तो फिलिस्तीन-इजराइल के मध्य गाजा-पट्टी को लेकर विवाद है, जिसमें प्रतिशोध की ज्वाला ने आतंकवाद को प्रज्ज्वलित कर रखा है। लीबिया में इस्लामिक कट्टरता है तो अफगानिस्तान में ईसाईयत, हिन्दुत्व और यहूदियों के प्रति विरोधी विचार चलने वाले तालिबान का अवतरण हुआ। उरुग्वे में टोपामेरो, छापामारों की सक्रियता है। श्रीलंका में तमिल आतंकवाद है, तो रूस में चेचन्या विद्रोही। अल्जीरिया, सूडान और मिस्र भी कई वर्षों से आतंकवाद की भट्टी में झुलस रहा है। भारत तो जैसे आतंकवाद की प्रयोगशाला बन गया है। पहले पंजाब, फिर कश्मीर, गुजरात और अब मुम्बई, आन्ध्र प्रदेश तथा राजस्थान आतंकवाद की रणस्थली बन गए हैं और धीरे-धीरे भारत का प्रत्येक राज्य इसकी चपेट में आता जा रहा है।

आतंकवादी विध्वंस का जो सिलसिला शुरू हुआ है, तो वह थमने का नाम ही नहीं ले रहा है। 11 सितम्बर, 2000 को अमेरिका में हुई 'ट्विन टावर' की घटना के बाद तो इन आतंकवादियों के हौसले बुलन्द हो गए हैं। अब तो कहीं आसानी से ये किसी भी बड़ी घटना को कहीं भी अंजाम दे सकते हैं, इसके बाद 13 सितम्बर, 2001 को भारतीय संसद पर हमला हुआ, 12 अक्टूबर, 2002 को बाली(इंडोनेशिया) में बम विस्फोट की घटना हुई, 16 मई, 2003 को मोरक्को में, 27 फरवरी को फिलीपीन्स में, 11 मार्च, 2004 को स्पेन की राजधानी मद्रिड में बम विस्फोट और 1 से 3 सितम्बर तक रूस में बेसलान की घटना हुई, 5 जुलाई, 2005 को अयोध्या में राम मन्दिर पर हमला हुआ। 7 जुलाई, 2005 को मिस्र के शम-अल-शेख नामक पर्यटक स्थान पर बम विस्फोट हुआ, लन्दन में ट्यूब ट्रेन के अन्दर बम विस्फोट हुआ तथा 25 अगस्त 2007 को आन्ध्र प्रदेश में बम विस्फोट की घटना और 26 नवम्बर 2008 को ताज होटल मुम्बई में हमला, 31 मार्च 2013 को श्रीनगर हुए हमले में 5 भारतीय जवानों की मृत्यु, 24 जून 2013 को श्रीनगर में हुए हमले में 8 जवानों की मृत्यु, 2 जनवरी 2015 को पठानकोट एयरबेस पर हमले में 7 जवानों सहित अनेक लोगों की मृत्यु, 27 जुलाई 2015 को गुरदासपुर हमले में गुरदासपुर के एस. पी. डिटेक्टिव बलजीत सिंह सहित 4 जवानों की मृत्यु, 7

दिसम्बर 2015 को अनंतनाग में हुए हमले में 6 जवानों की मृत्यु, 25 जून 2016 को पंपोर में सी.आर. पी.एफ. के काफिले पर हमले में 8 जवानों की मौत, 18 सितम्बर 2016 में उड़ी सेक्टर में सेना के कैंप पर हुए हमले में 20 जवानों की मृत्यु, ये सब उदाहरण इस बात को इंगित करते हैं कि आतंकवादियों की पहुँच कभी भी, कहीं भी, कैसे भी हो सकती है। इन घटनाओं से स्पष्ट हो गया है आतंकवादियों का लक्ष्य किसी सत्ता तक पहुँच बनाना नहीं, बल्कि विश्व समाज की शान्ति व्यवस्था को भंग कर विध्वंस करना है। विध्वंस को जन्म देकर लक्ष्य की प्राप्ति ही इनके उन्मादी जोश का प्रेरणा स्रोत है तथा लक्ष्य की प्राप्ति के लिए इन्हें इस्लामिक कट्टरता का जामा पहना दिया जाता है एवं इन्हें धार्मिक लड़ाकों की संज्ञा दे दी जाती है, जिसे जेहाद कहा जाता है।

आज विश्व शान्ति को सर्वाधिक आघात पहुँचाने वाला 'इस्लामिक आतंकवाद' ही है, जिसका आधार स्तम्भ बना ओसामा बिन लादेन जो धार्मिक कट्टरपंथियों का नेता बन बैठा था। वस्तुतः इस्लामिक आतंकवाद का लक्ष्य विश्व स्तर पर अव्यवस्था उत्पन्न करना है। आतंकवाद विषय पर भारत की चर्चा न करना बेमानी होगा, क्योंकि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से ही आतंकवाद से संघर्ष कर रहा है। अभी हाल ही में प्रकाशित एक रिपोर्ट में बताया गया है कि आतंकवादियों के इरादों को सदैव नाकाम किया है और बिना डरे तटस्थापूर्वक इस समस्या से लड़ रहा है। समूचे विश्व को देखने के बाद स्पष्ट है भारत में आतंकवाद पूर्ण राजनैतिक चुनौती बन चुका है। हमारे यहाँ जम्मू-कश्मीर के मुख्यतः आतंकवादी संगठन हिजबुल-मुजाहिदीन, अल फरान, हरकत उल अंसार सक्रिय हैं। आन्ध्र प्रदेश में नक्सलवादी संगठन 'पीपुल्स वार ग्रुप, लिबरेशन आर्मी, एम.सी.सी. आदि सक्रिय हैं, मणिपुर में पीपुल्स रिवाल्यूशनरी पार्टी, असम में बोडों व उल्फा, त्रिपुरा में नेशनल लिबरेशन फ्रण्ट ऑफ त्रिपुरा, मिजोरम में 'मिजो नेशनल फ्रण्ट, नेपाल से सटे पूर्वी राज्यों में माओवादी उग्रवादी संगठन सक्रिय हैं। लश्कर-ए-तैयबा ने पूरे विश्व में आतंक का जाल फैला रखा है। पाक स्वयं 37 संगठनों का प्रशिक्षण स्थल बनकर स्वयं को आतंकवाद की समस्या का विरोधी बता रहा है। वहीं से आतंकवादियों को प्रशिक्षित खेप तैयार होती है, जिन्हें कहीं भी आतंक फैलाने को खुला छोड़ दिया जाता है।

प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवादी संगठन

क्रम	आतंकवादी संगठन	देश
1	आर्मड	मनीला, फिलीपीन्स
2	अबु निदाल आर्गनाइजेशन	लोबिया, लेबनान
3	अलस्टर डिफेंस एसोशिएशन	नॉर्थ आयरलैंड
4	अल्जीरियन सीक्रेट आर्मी	अल्जीरिया
5	इस्लामिक ग्रुप	अल्जीरिया
6	इस्लामिक साल्वेशन फ्रण्ट	यूरोप
7	इस्लामिक उक्लावी महाज	पाकिस्तान

9	इस्लामिक स्टेट	सीरिया, ईराक
10	हरकत उल अंसार	कश्मीर, भारत
11	हिजबुल मुजाहिदीन	भारत, पाक
12	फतह	ट्यूनिश
13	हम्मास	लेबनान, फिलीस्तीन
14	नेशनल रिबरेशन आर्मी	जर्डिन
15	लिबरेशन फ्रण्ट	फ्रांस
16	ग्रीक राइटिस्ट टेसरिस्ट	इटली
17	नेशनल लिबरेशन आर्मी	कोलम्बिया
18	बाको हराम	नाइजीरिया

भारत में आज प्रत्येक व्यक्ति और समाज आतंकवाद की समस्या से ग्रसित है। दहशत, चोरी, लूट, डकैती, हत्या बलात्कार, भ्रष्टाचार, विश्वासघात की विभीषिकाएँ व्यापक हैं। आतंकवादी योजनाएँ पूर्णतया सफल हैं। ऐसी स्थिति में आतंकवादियों के आपराधों पर अंकुश लग पाना ठीक उसी प्रकार असम्भव प्रतीत हो रहा है, जैसे किसी बालक द्वारा अपनी छाया को पकड़ना या किसी नदी-तालाब में प्रतिबिम्बित-चाँद के माध्यम से चंद्रमा को पकड़ना। ऐसा क्यों? उत्तर जानने के लिए आतंकवाद और आतंकवादी योजनाओं की अंजाम प्रक्रिया को जानना होगा। आतंकवादी कौन, कहाँ रहता है? आतंकवादी की सुरक्षा कैसे होती है? आतंकी योजनाओं को अंजाम कैसे दिया जाता है? आतंकवादियों को सहयोग-संरक्षण कौन देता है? अतंकवाद में पुलिस, राजनीतिज्ञ एवं देश और समाज की भूमिकाएँ कैसी होती हैं?

ऐसे व्यक्तियों के सम्बन्ध में सुधार हेतु शिकायत-कार्यवाही की स्थिति को समझने के लिए पर्याप्त उदाहरण है, "एक समय व्यक्ति ने मार्ग में खड़े एक उदण्ड किशोर को रूक-रूक कर 'यूरिन' करते देखा तो उन्होंने उसके पिता से शिकायत की बात सोची और उसके यहाँ जाकर देखा कि उस किशोर का पिता दरवाजे पर खड़े होकर धूम-धूम कर 'यूरिन' कर रहा है।"

धार्मिक और राजनैतिक तथा सामाजिक व्यक्तियों के वास्तविक जीवन के आचरणों से रूबरू होने पर हम देखते हैं कि इनमें अधिकांश व्यक्तियों की कथनी और करनी में विपरीत सम्बन्ध होता है। इनके आचरण अति स्वार्थी, वासनात्मक एवं बर्बरतापूर्ण होते हैं। इनकी कथनी और करनी के प्रदर्शन में ठीक उसी प्रकार सामंजस्य रहता है यथा शराबी-कबाबी के मुख पर पान के बीड़ा की लालामी तथा रक्त-रंजित-गन्दे दुर्गंध युक्त वस्त्र धारण करने वालों पर बेला-चमेली से बने सेण्ट की सुगंधित खुशबू।

पूँजीवादी एवं मांसाहारी युग में आज मांस का बाजार व कसाई-बाड़ा लाभ का मुख्य व्यापार के रूप में प्रतिष्ठित होकर इससे सम्बन्धित उद्योग दिन-दूने और रात-चौगने विकसित हो रहे हैं। मृत शवों के

चर्म और मांस बिक्री के ठेके धन, पद और प्रतिष्ठित लोग ले रहे हैं। इनके द्वारा लाभ कमाने के उद्देश्य से मृत शवों के मांस में जहरीला रसायन मिलाकर चीलों, कौओं, गिद्धों को मारा जा रहा है। पक्षियों को फंसाकर पिंजरों में बन्दकर बाजार में ले जाकर कत्ल किया जा रहा है। मार्गों, बाजारों, होटलों, दूकानों पर लटके जले, भुने, कटे पशु-पक्षियों के शवों के दृश्य सर्व-समाज के स्त्री-पुरुषों और बच्चों के मन-मस्तिष्क को बुरी तरह प्रभावित कर हिंसा और आतंकवाद मार्ग अपनाने को प्रोत्साहित कर रहे हैं।

आज अधिकांश बड़े आतंकवादी पड़ोसी देशों के बंगलों एवं राज-अधितिग्रहों में राजकीय सम्मान प्राप्त कर ऐशोआराम का जीवन व्यतीत करते हैं और वहीं पर घटनाओं को अंजाम देने के लिए योजनाएँ बनाते हैं। लूट, हत्या, बमब्लास्ट की घटनाओं को अंजाम देते हैं। घटना उपरान्त राजनेता एवं पुलिस के साथ घटना स्थल पर जाकर नाटक कर पक्षकारों पर दबाव बनाते हैं, जिसके कारण लोग इनके विरुद्ध बोलने-गवाही देने की हिम्मत नहीं जुटा पाते एवं इनके विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज नहीं की जाती है।

आज के दौर में व्यक्ति अपनी समस्याओं के समाधान तथा घर-परिवार के विकास हेतु राजनैतिक सम्बन्धों व सहायता की विशेष अपेक्षा रखता है। जिसकी पूर्ति हेतु राजनैतिक एवं सत्ताधारी नेताओं की आवभगत करने में जुटा हुआ है। अपने आवासों एवं प्रतिष्ठानों पर नेताओं को बुलाकर उनकी खातिरदारी करता है। परिचितों को लाकर उनसे सम्बन्धों की दुहाई देता है। यहाँ तक कि अपने परिवारीजनो के बीच उनको स्वच्छन्द छोड़कर अपनी लोक-लाज प्रभावित कराता है।

भारत की प्रमुख राष्ट्रीय इमारत 'लालकिला' के संग्रहालय में मात्र इस्लामिक मुगलकालीन और गुलाम भारत के जालिमों के राजसी शान की स्मृतियाँ तथा अंग्रेजों द्वारा भारतीयों की हिंसा में प्रयोग की वस्तुओं का संग्रह है। स्वतंत्र भारत का मुख्य केन्द्र जहाँ हमारे राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री राष्ट्रीय पर्वों पर तिरंगा फहराकर विश्व को भारत की आजादी का सन्देश देते हैं। वहाँ पर भारतीय लोकतान्त्रिक की धर्म निरपेक्षता को प्रभावित करने वाली हिन्दू विरोधी वस्तुओं का संग्रह किसी भी दृष्टिकोण से उचित नहीं है।

भारतीय इतिहास का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि 2500-1750 ईसा पूर्व सिन्धु घाटी सम्यताकाल रहा है। 1500-600 ईसा पूर्व के कालखण्ड को वैदिक सभ्यता की संज्ञा दी गई है तदुपरान्त बौद्ध, जैन एवं इस्लाम धर्म स्थापित हुए हैं। 326 ईसा पूर्व सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण कर पंजाब के राजा पोरस से युद्ध किया 323 ईसा पूर्व राजा पोरस की मृत्यु हुई। इनके बाद चंद्रगुप्त, बिंदुसार, अशोक, शुगवंश, पांड्यवंश, चाले, चोलवंश, यवन, शक, पल्लव, कुषाण, चंद्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त-द्वितीय, कुमारगुप्त-प्रथम, स्कन्दगुप्त, हर्षवर्धन, राष्ट्रकूट वंश, पल्लववंश, गंगवंश, चोलवंश, राजराज और उसके पुत्र राजेन्द्र प्रथम ने 1044 ई. तक शासन किया। मोहम्मद गोरी ने 1194 में दिल्ली के शासक पृथ्वीराज चौहान तथा कन्नौज के राजा जयचन्द्र को पराजित कर भारत में मुस्लिम साम्राज्य स्थापित किया। इल्तुमिश, रजिया सुल्तान, बलवन, जलालुद्दीन, इब्राहिम लोदी, बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ, औरंगजेब और शेरशाह सूरी ने 1545 तक भारत में राज्य

किया। इसके बाद ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना हुई तथा 14 अगस्त 1947 तक अंग्रेजों ने भारत को गुलाम बनाकर शासन किया। 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतन्त्र हुआ और 26 जनवरी, 1950 को भारत ने अपना संविधान लागू किया।

उक्त ऐतिहासिक तथ्यों से प्रमाणित है कि मुगलशासन से पूर्व और बाद भारत इस्लामिक राष्ट्र नहीं रहा। मुगल शासन की स्थापना हिन्दुत्व और भारतीय शासकों को नष्ट करके हुई जिसे अंग्रेजों ने समाप्त कर अपना गुलाम बना लिया था। स्वतन्त्रता उपरान्त भारत धर्म-निरपेक्ष लोकतान्त्रिक राष्ट्र बना। जिसमें सभी धर्मों के लोगों को भारत में अपने-अपने ढंग से पूजा-पाठ और धार्मिक कर्मकाण्ड करने की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता प्रदान की गई। इसके बावजूद भारत की केन्द्रीय इमारतों में स्थापित राष्ट्रीय संग्रहालयों में मात्र मुगलकालीन और गुलामी की प्रतीक वस्तुओं का संग्रह उचित नहीं है।

आज विश्व के प्रगतिशील देशों और इस्लामिक राष्ट्रों के पर्यटक भारत प्रवास के दौरान देश की केन्द्रीय इमारत में बने राष्ट्रीय संग्रहालयों की अबौद्धिक व्यवस्था को देखकर अपनी प्राचीनतम उपलब्धि पर अवश्य ही उत्साहित होते होंगे। यही कारण है कि अन्य मुल्कों के बौद्धिक एवं संगठित लोग योजनाबद्ध तरीके से भारत में घुसपैठ कर भारत में अनेक तरह की आतंकी व व्यवसायिक गतिविधियाँ संचालित कर देश की जनता का हनन कर राष्ट्रीय सम्पत्ति नष्ट कर रहे हैं। यहाँ तक कि संसद को घेरकर गोलीबारी, नरसंहार, तस्करी, प्रधानमंत्री की हत्या एवं देश का धन व सम्पत्ति हड़पने में सफल हो रहे हैं। यह एन.जी.ओ, कम्पनी, मीडिया, दूतावास केन्द्रों के माध्यम से घुसपैठ कर भारतीयों को लालच देकर आपने आतंकी संगठन में शामिल कर देश की राजनीति और लोकतान्त्रिक व्यवस्था में हस्तक्षेप करने में सफल हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में आवश्यक है कि भारत की एकता और अखण्डता की सुरक्षा हेतु भारत की केन्द्रीय इमारत 'लालकिला' के राष्ट्रीय संग्रहालयों में भारत के वास्तविक अवशेष तथा देश की स्वतन्त्रता की प्रेरक भारतीय स्मृतियों के प्रतीकों का संग्रह आवश्यक है।

आतंक को रोकने के लिए कुछ तन्त्रों की रचना आवश्यक है। आतंकवाद और राजनैतिक हिंसा आज भारतीय समाज के लिए अभिशाप हो गए हैं। दोनों देश को अराजकता और अस्तव्यस्तता की ओर ले जा रहे हैं आतंकवादी धर्म और क्षेत्र के नाम पर, भाषा और संस्कृति के नाम पर हत्या करते हैं। आज समय आ गया है, जबकि व्यक्तियों में, विशेषकर से युवाओं में, व्यापक कुण्ठा और वंचन की भावना को रोका जाए। एक ओर सरकार को बहुत कड़े रूप से आतंकवादियों से निबटना है और दूसरी ओर अल्पसंख्यकों को सुरक्षा प्रदान करनी है और सही प्रजातन्त्र के चलने के लिए उपयुक्त वातावरण उत्पन्न करना है। आतंकियों को आतंकित करने वाले आतंकवादियों के आतंक से मुक्त करना होगा।

सन्दर्भ सूची

1. रस्तोगी आर. के., भारतीय समाज एवं संस्कृति, संजीव प्रकाशन, लाल कुँआ, मेरठ, तृतीय संस्करण, वर्ष 1997
2. शर्मा जी. एल., सामाजिक मुद्दे, रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2015

3. अहूजा राम, सामाजिक समस्याएँ, रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण, वर्ष 2016
4. बघेल जी. एस., अपराधशास्त्र, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली-110007, ग्यारहवां संस्करण, वर्ष 2013
5. रस्तोगी आर. के., मानवशास्त्र-सामाजिक एवं सांस्कृतिक, संजीव प्रकाशन मेरठ, नवीन संस्करण, वर्ष 1998
6. कुमार आनन्द, समाजशास्त्र की प्राथमिक अवधारणाएँ, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली, वर्ष 1990-91
7. मित्तल एम.एल. एवं रस्तोगी वर्षा, भारतीय समाजशास्त्र, साधना प्रकाशन, सुभाष बाजार मेरठ, वर्ष 1991-92